International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मृदुला गर्ग की उपन्यासों में सामाजिक चेतना

मुक्कप्पा राठोड
शोधार्थी
हिन्दी विभाग बेंगलूरू विश्वविध्यालय बेंगलूरू -56005

भूमिका

साहित्य सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम है इसलिए वह रचनाकार के सामाजिक बोध को रेखांकित करने में सहायक होता है, वह रचनाकार की जीवन दृष्टि और उसके द्वारा सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट करने का माध्यम बनता है. जिसके आधार पर लेखक सामाजिक विकास की प्रक्रिया को रचना के धरातल पर स्पष्ट करते हुए साहित्य और समाज के संबंधों की पड़ताल करता है। उनके उपन्यास, कहानी एवं नाटक साहित्य के विश्लेषण के द्वारा उनके इस प्रयास को स्पष्ट करेंगे ।

उपन्यास

उसके हिस्से की धूप

श्रीमती मृदुला गर्ग के इस प्रथम उपन्यास की कथा वस्तु एक त्रिकोणात्मक प्रेम कहानी पर आधरित है। जिसमें एक ओर पति दूसरी ओर प्रेमी के बीच जूलती एक स्त्री के मानसिक सोच-विचारों के उथल-पुथल को उजागर किया है । इस उपन्यास की नायिका मनीषा अकेलापन जितेन राय बहुत ही सम्पन्न व्यक्ति है। स्वयं ऊँचे ओहदे पर (फैक्टी में मैनेजर) कार्यरत है । लेकिन जितेन इतना वस्त रहता है कि मनीषा के लिए थोड़ा भी समय नहीं निकाल पाता है, इसलिए मनीषा अपने आप को एकदम अकेली महसूस करती है। अतः वह जितेन से पूछती हैं - "क्या हम कभी इकटठे कहीं बैठकर इधर-उधर की मामूली बातें नहीं कर सकते ? क्यों हम एक-दूसरे से यूँ कटे-कटे इस आलीशान कोठी की चारदीवारी में पड़े सड़ रहे हैं ? क्यों तुम समझ नहीं सकते कि समय मुझे पल- पल करके खाता जा रहा है ?" वह अपनी इस ऊब को मिटाने के लिए कॉलेज में नौकरी करने लगती है । वहाँ उसका परिचय कॉलेज के एक अध्यापक मधुकर नागापाल से होता है । मनीषा अपने बारे में सोचती है कि "चार वर्ष पहले भी तो लिखती थी और तब आर्थिक मजबूरी भी कोई नहीं थी, फिर वह कॉलेज क्यों जाती थी ? क्या महज अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करना है ।

तलाक की समस्या

आज संयुक्त प्रणाली के स्थान पर अणु परिवार ने स्थान ग्रहण कर लिया है। लेकिन इस प्रकार के परिवार में ही तलाक सबसे अधिक नजर आई हैं। परिवार के सदस्य इतने स्वार्थी बन गए हैं कि अपने जीवन साथी के सुख-दुःख, उसकी भावनाओं और मजबूरियों को समझने की कोशिश नहीं करते। मनीषा को शारीरिक कट न होने पर भी वह तलाक से पूर्व मधुकर से जडती है और उसके पश्चात बहुत ही आसानी से जितेन से तलाक ले लेती है । डा.रोहिणी अग्रवाल के अनुसार- "जितेन की पत्नी के रूप में मनीषा के मधुकर के साथ संबंध तथा मधुकर की पत्नी के रूप में जितेन के साथ संबंध मनीषा की चरित्रहीनता अथवा अनैतिकता को इंगित नहीं करते, बल्कि उसके इंद्र को, उसके भटकाव को रेखांकित करते हैं कि वह जीवन में क्या चाहती है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मातृत्व

जब तक मनीषा जितेन के साथ रही उसने कभी माँ बनने की बात नहीं सोची,

अपने माँ-बाप के साथ किया था । मनीषा "व्यक्ति स्वतंत्रता के साथ ही साथ के स्तर में भी समानता चाहती है। डा. धर्मध्वज त्रिपाठी के अनुसार मनीषा क्षित समुदाय की विवेक सम्पन्न नारी है। वह आधुनिक समाज में नारी स्वातंत्र्य ही समर्थक है। यह स्वातंत्र्य प्रत्येक स्तर पर है... चाहे परिवार हो, चाहे समाज हो चाहे प्रेम जैसी कोमलतम भावनाओं की ही क्यों न हो? यही नहीं, स्त्री-पुरूष दोनों के दष्टिकोण में भी समानता का भाव अवश्य है क्योंकि स्त्री-पुरुष दोनों के दृष्टिकोण में भी समानता का भाव अवश्य है क्योंकि स्त्री-पुरूष दोनों ही मिलकर समाज की एक इकार्ड बनते हैं-वे समाज की सदृढ़ आधारशिल है।

नैतिकता का हास

मनीषा जितेन से ऊबकर मधुकर से संबंध बनाती है उसके पश्चात मधुकर से ऊबकर जितेन से संबंध बनाती है लेकिन मनीषा अपने इस कृत्य को थोड़ा भी गलत नहीं मानती है बल्कि उसे वह सहज …
करता है। किन्तु भाव संवेग की इतनी व्याप्ति भी कभी-कभी अनुचित प्रतीत होती है। मनीषा मधुकर के बारे में कहती है- "इस आदमी में भावसंवेग इतना विस्त और गहरा है कि उसके शरी से फूट-फूटकर बहती उसकी विद्युत तरंगे न उसे चैन से रहने देती हैं, न किसी और को, ऊर्जा का ऐसा भंडार है कि वह सोच ही नही सकता कोर्ड थका भी हो सकता है, जीवन के प्रति इतनी जिज्ञासा है कि वह कल्पना भी नहीं कर सकता कि कोई स्वेच्छा से अकेला रहना चाह सकता है।

प्रेमहीन दाम्पत्य

वैवाहिक जीवन की सफलता तभी है जब पति-पत्नी एक-दूसरे को प्यार करते हों, एक-दूसरे पर विश्वास करते हों। यदि पति-पनि के बीच एक-दूसरे के प्रति यथार्थ प्यार नहीं है तो उनका जीवन व्यर्थ है। पत्नी बिना इच्छा के पति को अपना शरीर देती है तो घुटन और असंतोष का अनुभव करती है। मनीषा का पति बिना प्यार जताए उसके शरीर को केवल एक व्यापार की…

स्त्री स्वतंत्रता

"उसके हिस्से की धूप" उपन्यास में वैवाहिक जीवन की समस्या का अंकन किया गया है। आधुनिक युग में विवाह करने के पश्चात औरत, पति या उसके भरवालों की दासी नहीं है। वह भी अपनी स्वतंत्रता चाहती है। स्वतंत्र निर्णय लेना चाहती है। स्त्री, पति का सहयोग तो चाहती है परन्तु हर कार्य उसके साथ करे या उसके छाया तले हो यह नहीं चाहती । मनीषा इस संदर्भ में सोचती है कि "यह वैवाहिक जीवन भी अजीव चीज है । जो करो साथ करो। साथ बैठो, साथ बोलो. आाहे बोलने को कुछ हो, चाहे नहीं । विवाह की विडंबना आधुनिक नारी के सा में सामने आती है ।

अपने अधिकारों के प्रति सजग नारी

परंपरागत औरत संयुक्त परिवार में रहते हुए अपने पति के साथ कहीं बाहर जाने के लिए तरसती थी । लेकिन आधुनिक, शिक्षित एवं कामकाजी मनीषा अपनी इच्छापूर्ति के सिलसिले में दिन भर इतना बाहर रहती है ।
लिखते है - "सम्पन्नता और अभाव के बीच अचानक वर्ग चेतना खाई की न
कैलती जाती है और आदमी वह कुछ कर बैठता है जो अपराध अनैनिकता 3.5.4 पूँजीपति वर्ग की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आलोचना से रहती है ।

अतः उसके मन में अपने आपमान

कौशल एक पैसा लेखक है जो अमीरों के चोंचलों से नफरत करत जब भी उसे अमीरों के प्रति नफरत दिखाने का मौका मिलता है तो वह चूकन है। कौशल माधवी पर व्यंग्य कसता है - "दंगों के दौरान किया गया कत्ल लिए कत्ल नहीं है । मुझे ऐसे लोगों से नफरत है जो सामाजिक अपरा अपराध नहीं मानती । जानती है. सामुहिक रुप से किया गया अपराध कह संगीत होता है, कहीं अधिक अमानवीय पर आपके वर्ग के लोग ऐसा नहीं कैसे समझेंगे। समाज का पैसा बटौर कर लाखों लोगों को भूखा मरने मजबूर करते हैं पर उसे चोरी नहीं मानते । हाँ, उनके अपना…

पड़ता है 1961 रंजना भी एकांकी जीवन बिताने वाली नारी है। अविजित रंजना के जाने पर अर्थ बारे में कहता है-"भीतर से मधुर पर सशक्त कंठ स्वर सुनाई दिया पईचा देने के लिए धन्यवाद, आगे वह खुद देख लेगी। विधवा हो की एकाकी जीवन व्यतीत करना सिकति है ।

अविजित गाँधी जी का भक्त रहा है लेकिन पनी के बीमार हो जाने पर काजल बनर्जी जो कि उनके बचपन की मित्र है उसे बार-बार मिलने जाने रंजना जो कि विधवा है उससे मिलने उसके घर चला जाता है । यहाँ तक संगीता से शारीरिक संबंध भी स्थापित करता है । वास्तव में अविजित का व् बहुत ही दुविधापूर्ण है। वह कौन सा मार्ग अपनाए इसका सही निर्णय है ।

बेटे को लेकर रंजना घर आई, महीने भर के अन्दर कॉलेज जाना शुरू कर औरत, रंजना को एक दिन भी अविजित ने रोते-ओंकते नही दिया। निपट अकेली देखा और न कडुवाहट में गोते लगाते ।1'162 रंजना अकेली होने पर भी उसकी जीवन धारा बहुत ही संयमित थी ।

हो को इसमें अभिव्यक्ति मिली है। रामदीन बलिया से कहना है अब रहा कौन? अब तो उमर इसी मसीनवा में हाड, झोकना है। गराई के टपरे के नीचे नदिया बह निकलेगी, समझे ?

गाँव की स्थिति पर लेखिका ने लिखा है- गाँव नहीं तो पक्की सड़को कला शहर भी नहीं है। एक औद्योगिक कस्बा । देहाती देश में यंत्रबद्ध युगका बड़ी भरा विस्तार । लिहाजा बेलापुर सीमेंट कारखाने की इमारत पक्की है, अफसरों के घर पक्के हैं. कारखाने और अफसर-कॉलोनी के बीच की सड़कें पक्की है। एक्की इमारतों के भीतर मशीनें आधुनिक हैं और सर्वोत्तम उत्पादिता की दौड़ में दिन-पर-दिन अधिक यंत्रीकृत होती जा रही है, पर कारखाने के बाहर खेत- खलिहान रहित, कच्ची सड़कों और नालों से घिरी, टपरों और कच्ची दीवारों की बस्ती है, जहाँ यंत्रीकरण के बदलाव में छंटते है ।

ग्रामीण जीवन

"पोंगल-पोली" कहानी में एक गाँव का चित्रण किया गया है जहाँ बहुत हो कलात्मक मन्दिर बने हुए हैं । गाँव में गंदगी, गरीबी, अशिक्षा होने के बावजूद भी सोनम्मा जैसे ग्रामीण लोग मन्दिर से अपनी पुरानी आस्थाओं के कारण एक रिश्ता बनाए हुए हैं । सोनम्मा एक नष्ट हुए मन्दिर के दरबाजे पर पक्ष और यक्षिणी जिसे वह पोंगल-पोली नाम से पुकारती है और इन दोनों मूर्तियों को बहुत चाहती है । लेकिन शहर की एक सुन्दर स्त्री इस गाँव में अपने शोध कार्य के लिए आती है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भग्रर्थ सूची

१ . शैलेश्वर सती प्रसाद - "अनित्य" समीक्षा-जुलाई-सितंबर 1981, प.18 61 डा. शील प्रभा वर्मा महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृ.156,
२ .मृदुला गर्ग - अनन्त, पृ. 156, तृतीय संस्करण। 1987
३.मुदुला गर्ग - अनंत, पृष्ठ 213, तीसरा संस्करण। 1987
४ .डा. शशि जेकब - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता, पृ.36, सं 1989
५.मृदुला गर्ग - टुकड़ा आदमी - पृ.1, तृतीय सं. 1995
६.मुदुला गर्ग - टुकड़ा आदमी - पृ.2, तृतीय सं. 1995